3. बीड़ी और बीड़ी बनाने वाले

(ठेकेदारी प्रथा से काम)

समीना बीड़ी बनाने के पैसे लेने गई

आज सट्टेदार सद्दू मियां के यहां बहुत से लोग जमा हैं। ये लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं। वे सद्दू मियां के घर से तेन्दू पत्ते की गड्डियां, तम्बाकू और धागा ले जाते हैं। फिर बीड़ी बनाकर सद्दू मियां को देते हैं।

सब लोग हफ्ते में निश्चित दिन अपने पैसे लेने आते हैं। रोज़ बनी हुई बीड़ियां देने आते हैं। साथ ही वे और बीड़ियां बनाने के लिए पत्ते, तम्बाकू, धागा ले जाते हैं। सद्दू मियां के घर पर लंबी कतार लगी है। वहां आदमी, औरत, लड़के, लड़कियां सभी हैं।

हर परिवार के एक व्यक्ति के नाम से सद्दू मियां के पास एक खाता है। सद्दू मियां अलग-अलग खातों में हर परिवार द्वारा जमा बीड़ियां लिख देता है, और हफ्ते के हिसाब से बीड़ी बनाने का पैसा दे देता है।

समीना भी उस कतार में खड़ी है। वह और उसकी अम्मा अमीना बी, बीड़ी बनाते हैं। समीना की उम्र 12 वर्ष है। खाता तो उसकी मां के नाम से है परन्तु आज समीना ही पैसे लेने आई है। समीना की मां बीमार है। इसीलिए समीना बीड़ियां भी नहीं ला पाई है। बीमार मां और छोटे भाई साजिद (जो सिर्फ 3 वर्ष का है) की देखभाल करने वाली वह अकेली है। उसी को खाना बनाना पड़ता है और घर की देखभाल भी करनी पड़ती है। वह मुश्किल से सब काम संभाल पाई है। ऐसे में बीड़ी बनाने की फुरसत कहां से मिलती?

जब समीना का नंबर आया तो उसने सद्दू मियां को अपनी मां का कार्ड बताया। सद्दू मियां ने पूछा "क्यों री! आज बीड़ी नहीं लाई? और तेरी अम्मा कहां है?" समीना ने कहा "3-4 दिनों से वह बुखार में पड़ी है। तभी तो मैं भी बीड़ियां नहीं बना पाई। आप इस हफ्ते के पैसे दे दीजिए। अम्मा ने 3 से 5 तारीख तक बीड़ियां जमा की थीं।" सद्दू मियां ने अमीना बी का खाता खोलकर देखा। छंटाई की बीड़ियां काटकर 2500 बीड़ियों का हिसाब बना। छंटाई की बीड़ियां काटने के बाद सट्टेदार 1000 बीड़ी बनाने के 22 रुपए 50 पैसे देता है। (मई 1994 में)

समीना को सद्दू मियां ने कितने पैसे दिए?

सद्दू मियां ने कहा "500 बीड़ी के पत्ते और तम्बाकू तुम्हारी अम्मा के पास हैं। जल्दी से बीड़ी बनाकर ले आना नहीं तो पत्ते तम्बाकू लौटा देना।"

समीना घर पहुंची तो देखा कि मां का बुखार कुछ कम हो गया है। पर बदन में दर्द अभी भी था। फिर भी वह

चित्र 1. सट्टेदार के घर पर

खाना बनाने की तैयारी कर रही थी। समीना ने उन्हें मना किया और खुद आटा सान कर रोटी बनाने लगी।

शाम तक अमीना बी की तबियत कुछ और अच्छी हो गई। तब समीना ने कुछ पत्ते भिगो दिए। सोचा कल वह कुछ बीड़ियां बना लेगी। गीले पत्तों की ही बीड़ियां बनती हैं। सूखे पत्तों को मोड़ने पर वे टूट जाते हैं।

समीना के पिताजी भी बीड़ी बनाया करते थे। वे 5-6 घंटों में 1000 बीड़ी बना लेते थे। तब समीना छोटी थी। उसके पिताजी और मां बीड़ी बनाते थे। एक दिन में 1500 बीड़ी बन जाती थीं। तीन साल हुए उसके पिताजी को खांसी और दमे की शिकायत शुरू हुई। बीड़ी बनाने की रफ्तार कम होती गई। फिर खांसी में खून जाने लगा। डॉक्टर ने बताया कि उन्हें तपेदिक की बीमारी है जो अक्सर बीड़ी बनाने वालों को हो जाती है। बहुत इलाज किया, पर समीना के अब्बा बच नहीं पाए। दो साल पहले उनकी मौत हो गई। तब से अमीना बी ही बीड़ी बनाती हैं और अब समीना भी उनका हाथ बंटाती है।

समीना ने बीड़ियां बनाईं

अगले दिन समीना और उसकी मां फरमा रख कर कैंची से पत्ते काटने बैठ गए। दोनों ने एक घंटे काम करके 300 पत्ते काटे। काटे हुए पत्ते गीली बोरी में रख दिए। समीना ने अपनी मां से कहा कि अब वह आराम करें। उसने खाना खाया और फिर खुद सूपा लेकर बीड़ी बनाने बैठ गई। सूपे के बीच में तम्बाकू रखी थी और एक तरफ गीली बोरी में लिपटे हुए कटे पत्ते। सूपे के उठे हुए हिस्से में एक तार लगा था जिस पर धागे की गिट्टी फंसी थी। सूपा, फर्मा, कैंची, चाकू सब अमीना के अपने ही हैं।

क्या ये सब चीज़ें तुम्हें चित्र 4 में दिख रही हैं?

बीड़ी किन चीज़ों से बनती है? यानी बीड़ी बनाने का कच्चा माल क्या है?

बीड़ी बनाने के लिए किन औज़ारों की ज़रूरत पड़ती है? ये औज़ार किस के हैं?

चित्र 2. पत्ते काटती समीना

समीना पत्ते का एक टुकड़ा उठाती, चाकू से उसका डंठल साफ करती और उसमें चुटकी भर तम्बाकू रखती। फिर वो पत्ते को गोल-गोल पुंगी की तरह मोड़ती। तम्बाकू को ध्यान से पत्ते पर फैलाना पड़ता-न ज़्यादा ठूंस-ठूंस कर और न ही ज़्यादा खाली।

फिर वह बीड़ी के पीने वाले सिरे पर धागा लपेटती। उसे उल्टा करके जलाने वाले सिरे को एक सलाई से टोंक देती। बीड़ी बनाकर सूपे में रखती जाती। कोई पत्ता टूट जाता या बीड़ी मुड़ जाती तो उसे अलग रख देती। जब 25 बीड़ी बन जातीं तो उनका एक बंडल बांध कर ज़मीन पर रख देती। उसके छोटे-छोटे हाथ तेज़ी से पत्ते लपेटते जा रहे थे। बीच-बीच में उसे मां को भी देखना पड़ता था। वह एक घंटे में करीब 50 बीड़ियां ही बना पाती थी। बीड़ी बनाते-बनाते समीना अपना जी हल्का करने के लिए गाना

चित्र 3. बीड़ी बनाती समीना

गुनगुना रही थी–

"पत्ते को उठाया
ज़र्दे से भरा
उसको लपेटा
पीछे से बांधा
आगे से टोंका
सूपे में रखा
चुटकी की बीड़ी सलाई की बीड़ी
बन गई रे बन गई
सारी की सारी, बीड़ी हमारी।"

सूपे में तम्बाकू खत्म हो जाता तो सूपे के नीचे रखे डिब्बे से थोड़ा और ले लेती। बहुत संभाल कर उसे तंबाकू का उपयोग करना पड़ता था। सट्टेदार नापतौल कर 1000 बीड़ियों के लिए 300 ग्राम तम्बाकू ही देता है। यदि तम्बाकू कम पड़ गई तो पैसे काट लेता है। पत्ते के टुकड़े यदि सूपे में खत्म हो जाएं तो पास में बोरी में लिपटे पत्तों में से और ले लेती।

समीना शाम तक बैठी बीड़ियां बनाती रही, तब कहीं जाकर 300 बीड़ियां बनीं। शाम को बाकी पत्ते भिगो दिए।

दूसरे दिन समीना ने 300 बीड़ियां सद्दू मियां को दीं और एक हज़ार बीड़ियों के लिए पत्ते, तम्बाकू और धागा ले आई। अब तो उसकी अम्मी की तबियत कुछ ठीक थी तो वे दोनों मिलकर एक दिन में 800 बीड़ियां बना सकती हैं।

बीड़ी किस तरह बनाई जाती है अपने शब्दों में लिखो।

यदि समीना और उसकी अम्मा मिलकर एक दिन में लगभग 800 बीड़ियां बना लेते हैं तो उन्हें एक दिन में कितने पैसे मिलते हैं? यदि वे महीने में 22 दिन काम करें तो एक महीने में उनकी कितनी कमाई हो जाती है?

कसेरे के काम और बीड़ी बनाने के काम मे क्या अंतर हैं?

क्या समीना सद्दू मियां को बीड़ी बेचती है या देती है? इन दोनों बातों में क्या अंतर है?

बीड़ी बनाने वालों के अधिकार

करीब 100 परिवार सद्दू मियां के यहां बीड़ियां जमा करते हैं। दो प्रकार के बीड़ी बनाने वाले सद्दू मियां के यहां बीड़ियां जमा करते हैं। एक, जिनके पास कार्ड हैं और दूसरे जिनके पास कार्ड नहीं हैं। करीब 50-60 परिवार ऐसे हैं जिनके पास कार्ड हैं। कार्ड का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इसी के आधार पर इन बीड़ी बनाने वालों को बीड़ी मालिक का मज़दूर माना जाता है और फैक्ट्री कानून के अनुसार वे कई सुविधाओं के हकदार हो जाते हैं। इसलिए सट्टेदार सारे मज़दूरों के बारे में जानकारी नहीं दर्शाता है। ये सुविधाएं इस प्रकार हैं -

1. हर तीन महीनों में हर 100 रुपए के काम पर 5 रु. ऊपर से यानी बोनस 5% मिलना चाहिए।

2. मज़दूर की आमदनी में से 6.25% (यानी हर 100 रु. पर 6 रु. 25 पैसे) काट कर बैंक में जमा किये जाने चाहिए। मालिक को भी इतने ही पैसे हर मज़दूर

बीड़ी बनाने वालों की बीमारियां

दिन भर बैठे एक टक काम करने से बहुत से बीड़ी बनाने वालों को तरह-तरह की बीमारियां होती हैं। तम्बाकू के साथ काम करने से सिर भारी होने लगता है। आँखें दुखने लगती हैं। सांस लेने में तकलीफ भी होती है। फेफड़ों की बीमारियां और फेफड़ों का कैंसर भी अधिक होता है। और फिर इतनी तेज़ी से उंगलियों से काम करने पर उंगलियों में भी गांठें पड़ने लगती हैं। इन बीमारियों की वजह से काम करने की क्षमता कम हो जाती है और कमाई भी कम हो जाती है।

के बैंक खाते में अपनी तरफ से जमा करना चाहिए। इस खाते को 'प्रॉविडेन्ट फन्ड' कहते हैं। इस फन्ड का पैसा मज़दूर के उपयोग के लिए है। केवल कार्ड वालों को ही यह अधिकार है।

3. जिनके पास ये कार्ड हैं, वे जब भी काम चाहें, उन्हें मिल सकता है। यदि 2-3 दिन बीच में काम नहीं भी किया फिर से उन्हें जब भी काम लेने आना हो, उन्हें मना नहीं किया जा सकता।

4. जिनके भी नाम पर ये कार्ड हैं, उन्हें बिना शुल्क के इलाज, उनके बच्चों को छात्रवृत्ति और घर बनाने के लिए बिना ब्याज के उधार मिल सकता है।

5. यदि उन्हें तपेदिक या कैंसर जैसी जान लेवा बीमारी होती है, तो मालिक को चाहिए कि उन्हें जीविका के लिए एक न्यूनतम आमदनी दे।

पहली तीन सुविधाएं तो आजकल कार्ड वालों को आम तौर से मिल रही हैं। परन्तु प्रॉविडेन्ट फण्ड का पुराना हिसाब-(1974-1985 तक का) अभी तक नहीं दिया गया है। चौथी और पांचवीं सुविधाएं भी आमतौर पर इन बीड़ी मज़दूरों को नहीं मिलतीं।

दूसरी बात यह कि अक्सर पूरा परिवार बीड़ी बनाने का काम करता है। परन्तु बीड़ियां जमा होती हैं परिवार के एक ही व्यक्ति के नाम पर। इसलिए सुविधाएं भी मिलती हैं एक ही व्यक्ति को, पूरे परिवार को नहीं।

कार्ड वाले मज़दूरों के अलावा अधिकांश बिना कार्ड वाले मज़दूर हैं। ये लोग भी बीड़ी बनाकर सट्टेदार के यहां जमा करते हैं। पर इन्हें ऊपर दी गई कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं है। जिनके नाम से बीड़ियां जमा की जाती हैं, हर दो-तीन महीनों में उनका नाम बदल दिया जाता है। उदाहरण के लिए यदि एक महीने मल्लू के नाम से एक परिवार की बनाई गई बीड़ियां जमा की जा रही हैं तो अगले महीने उसके भाई सोहन के नाम से जमा की

चित्र 4. बीड़ियां बन रही हैं

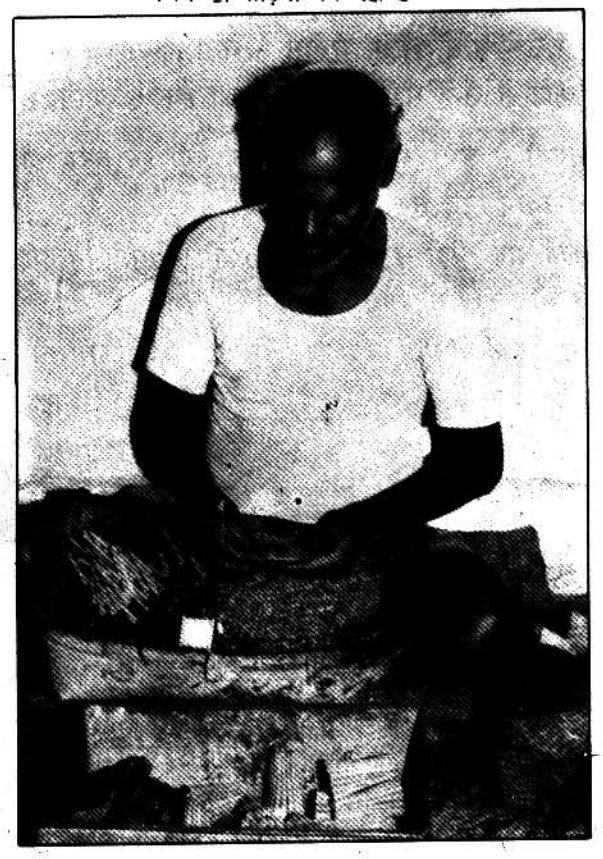

चित्र 5. समीना बीड़ियां जमा कर रही है

जाएंगी। फिर उसकी पत्नी का नाम डाला जा सकता है। ऐसा क्यों किया जाता है? इसलिए कि कानून के हिसाब से यदि तीन महीनों से अधिक एक नाम से बीड़ियां जमा की जाती हैं, तो उन्हें कार्ड मिलना ज़रूरी है। कार्ड नहीं है तो उन्हें कभी भी काम देने से मना किया जा सकता है। कार्ड से उन्हें सभी सुविधाओं का हक हो जाता है।

गुरुजी से चर्चा करो कि कसेरे को क्या इस तरह की सुविधाएं मिल सकती है।
कार्ड वाले बीड़ी मज़दूरों को कौन सी सुविधाएं मिलती हैं और कौन सी मिलनी चाहिए?
सट्टेदार के खातों में बिना कार्ड वाले मज़दूरों के नाम क्यों बदले जाते हैं?

सट्टेदार का काम

सद्दू मियां के यहां उनके काम का ये सिलसिला चलता रहता है। बीड़ी बनाने वालों से रोज़ बीड़ी इकट्ठी करना। उन्हें तेंदूपत्ते और तम्बाकू देना। हर हफ्ते उनका हिसाब करना। कारखाने में ले जाकर बीड़ियां जमा करना। मालिक से हफ्ते का हिसाब करना और पत्ते, तम्बाकू लेकर आना। यही सब तो सट्टेदार का काम है।

सद्दू मियां के घर के लोग भी बीड़ियां बनाते हैं। पहले सद्दू मियां भी बीड़ियां बनाया करते थे पर उन्होंने अब यह काम छोड़ दिया है।

सद्दू मियां के यहां बीड़ी बनाने वालों ने बीड़ियां जमा कर दी थीं। रोज़ करीब एक लाख बीड़ियां सद्दू मियां के घर पर जमा की जाती हैं। सद्दू मियां और उसके बेटे रफीक ने बीड़ियां गिनीं। बीड़ियों की छंटाई की। फिर वे दोनों कारखाने में बीड़ियां जमा करने गए।

कारखाने के मालिक ने 22 रु. 50 पैसे प्रति हज़ार के हिसाब से बीड़ी बनाने के पैसे सद्दू मियां को दिए। उन्होंने पूरी बीड़ियों का हिसाब किया चूंकि खराब बीड़ियां सद्दू मियां ने पहले ही छांट ली थीं।

सद्दू मियां बीड़ी बनाने वालों को 1000 बीड़ियों के 22 रु. 50 पैसे देने के बजाए 1025 बीड़ियों के 22 रु. 50 पैसे देते हैं। वे 25 बीड़ियां अधिक इसलिए लेते हैं चूंकि कई बार बीड़ियां खराब निकल जाती हैं और उन्हें हटाना पड़ता है।

पर जितनी बीड़ियां सद्दू मियां छंटाई के लेता है, उतनी खराब नहीं निकलतीं। इसलिए सद्दू मियां को कुछ अधिक फायदा होता है। बीड़ियां जमा करने, पत्ते और तम्बाकू बांटने आदि कामों के लिए मालिक सद्दू मियां

चित्र 6. सट्टेदार के यहां पत्ते दिए जा रहे हैं

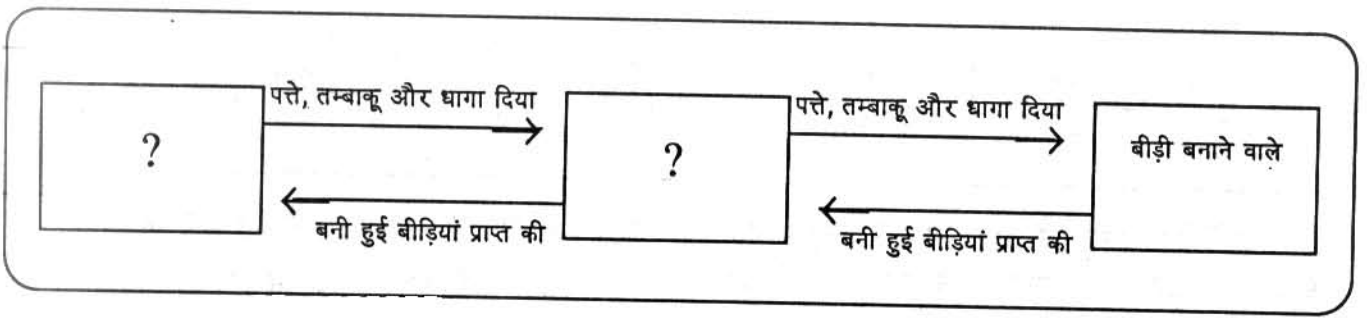

को हर 1000 बीड़ियों पर 50 पैसे कमीशन अलग से देता है। सद्दू मियां को 50 पैसे प्रति हज़ार के हिसाब से 1,00,000 बीड़ियों का रोज़ 50 रु. कमीशन मिल जाता है।

आजकल 1000 बीड़ी के लिए 22 रु. 50 पैसे बीड़ी बनाने की मज़दूरी का सरकारी रेट है। पर सभी जगह मालिक ये रेट नहीं देते हैं। कहीं पर 18 रु. देते हैं तो कहीं 20 रु. और फिर कई जगह सट्टेदार भी इसमें से कुछ पैसे रख लेते हैं। कहीं पर बीड़ी बनाने वालों को 15 रु. ही मिल पाते हैं तो कहीं पर 12 रु.।

समीना और उसके जैसे कई परिवार बीड़ी बनाते हैं और सट्टेदार के यहां जमा कर देते हैं। वे इन बीड़ियों को स्वयं बेच नहीं सकते। इन्हें सट्टेदार भी नहीं बेच सकता क्योंकि तेंदू पत्ते, तम्बाकू और धागा ये सब कच्चा माल सट्टेदार या बीड़ी बनाने वालों का नहीं, बीड़ी कारखाने के मालिक का है।

कारखाने का मालिक यह सब कच्चा माल सट्टेदार को दे देता है, बीड़ी बनाने वालों को देने के लिए। बीड़ी बनाने वाले मज़दूर बीड़ी बनाकर सट्टेदार को देते हैं। सट्टेदार इन बीड़ियों को बीड़ी कारखाने में जमा करता है।

ऊपर दिए गए रेखा चित्र को समझकर उसके खाली स्थान भरो।

कसेरा एवं बीड़ी बनाने वालों की तुलना करते हुए केवल ग़लत वाक्यों को सुधारो।

क) बीड़ी बनाने वाला खुद बीड़ी बेचता है।

ख) बर्तन बनाने वाला कसेरा खुद बर्तन बेचता है।

ग) बीड़ी बनाने वाला अपना कच्चा माल खुद खरीदता है।

घ) कसेरा अपना कच्चा माल सट्टेदार से लेता है।

ङ) बीड़ी बनाने की बीड़ी सट्टेदार की होती है।

च) कसेरे के बर्तन उसके अपने होते है।

बीड़ी का कारखाना और कारखाना मालिक

अब चलें तीर छाप बीड़ी के कारखाने में, जहां सद्दू मियां बोड़ियां जमा करता है। यह मनमोहन का कारखाना है। अप्रैल का महीना है तो तेन्दू पत्ते तुड़वाने वह जंगल गया है। उसका छोटा भाई आनंद कारखाने की देखरेख कर रहा है।

मनमोहन हर साल जंगल का ठेका लेता है। तेन्दू पत्ते तोड़ने के लिए जंगलों की नीलामी होती है। जो जंगल मिल

चित्र 6. सिकाई

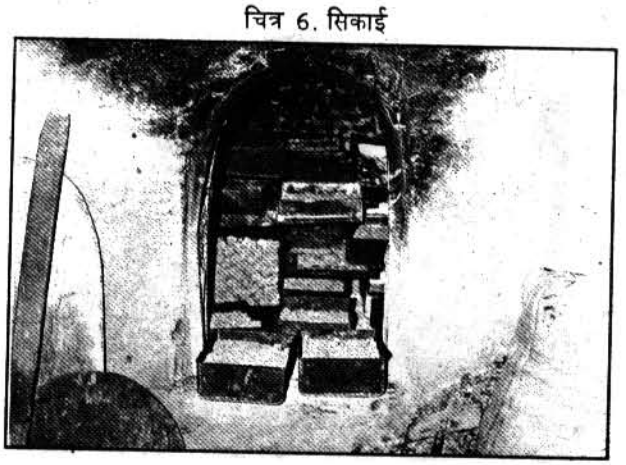

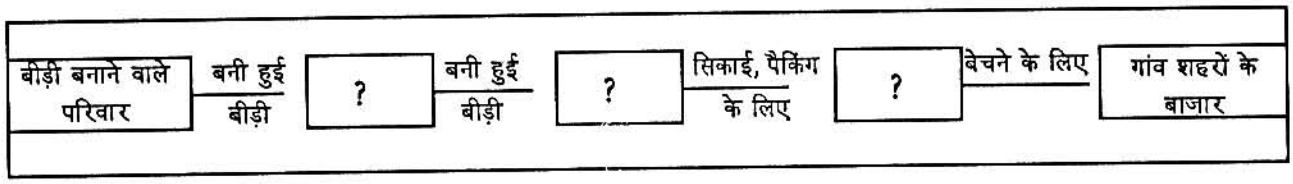

बीड़ी बनाने वाले परिवार	बनी हुई बीड़ी	?	बनी हुई बीड़ी	?	सिकाई, पैकिंग के लिए	?	बेचने के लिए	गांव शहरों के बाजार

जाए, उसमें ठेके से मज़दूर लगाए जाते हैं। तेन्दू के पेड़ों की छंटाई आदि के बाद फरवरी से जून के महीने तक पत्तों को तोड़ा जाता है। पत्तों को तुड़वाना, गड्डी बनवाना, उन्हें सुखाना और बोरों में भरकर ट्रक से कारखाने तक भेजना ये सब मनमोहन ही करवाता है। बोरियां उतरवा कर गोदाम में रखवाई जाती हैं। अब तम्बाकू भी खत्म होने को है। इसके लिए मनमोहन का मंझला भाई हैदराबाद गया हुआ है। आनंद ने बंबई से धागा मंगवाने के लिए फोन लगाया है। इस प्रकार यहां मालिक ही कच्चा माल इकट्ठा करने का काम करता है।

सद्दू मियां बीड़ियां लेकर आए है। मुंशीजी उसका हिसाब कर रहे है। छंटी हुई बीड़ियां तंदूर में सिकने जाती है जैसा कि तुम चित्र-10 मे देख सकते हो। मज़दूर छंटे हुए बंडल ट्रे में जमाते है। तंदूर मे सिकाई के समय बीच-बीच में बण्डलों को पलटना पड़ता है ताकि वे चारों तरफ से अच्छी तरह सिक जाए। सिकाई में कई बार कुछ बीड़ियां टेढ़ी हो जाती हैं। कोई बीड़ी अधिक सिक जाती है तो कोई कम। इनको सिकाई के बाद अच्छी बीड़ियों से अलग किया जाता है यानी फिर से छंटाई का काम। सिकी हुई बीड़ियों को पैकिंग के लिए दूसरे कमरे में भेजा जाता है। इस कमरे में कागज़, लेई और लेबल लेकर

चित्र 7. पैकिंग

मज़दूर बीड़ियों के बण्डलों की पैकिंग कर रहे है।

कारखाने में सिकाई, छंटाई और पैकिंग करने वाले मज़दूरों को प्रति दिन के हिसाब से मज़दूरी मिलती हैं। इन्हें **फैक्ट्री कानून** के अंतर्गत वही सुविधाएं मिलनी चाहिए जो कार्ड वाले बीड़ी मज़दूरों को मिलती है। मज़दूरों से बात करने पर उन्होंने बताया कि पहले की तुलना में कुछ सुविधाएं जैसे, छुट्टियों के पैसे, बोनस आदि का लाभ मिला है। परन्तु इलाज, बच्चों के लिए छात्रवृत्ति, गंभीर बीमारी में मुआवज़ा आदि का लाभ अभी भी नहीं मिल पा रहा है।

बीड़ियां बनकर पैक हो गईं। मनमोहन के कारखाने में रोज़ लगभग एक लाख बीड़ियां तैयार होकर पैक होती हैं। ये बीड़ियां आस-पास के गांवों और शहरों में बिकती हैं। इस बिक्री से कारखाने के मालिक को काफी फायदा होता है।

तुमने देखा कि समीना और अन्य लोगों के घरों पर बनायी बीड़ियां लेकर सद्दू मियां कारखाने में आए थे' शेष काम कारखाने में हुआ और यहीं से पैक किए हुए बीड़ी के बण्डल बाज़ार मे बिकने के लिए चले जाते हैं क्या बाज़ार में बेचने का काम सद्दू मियां करते हैं? नहीं बेचने का काम कारखाने के मालिक ही, करते हैं।

ऊपर दिए रेखा-चित्र को समझते हुए, खाली स्थान भरो।

कारखाने का मालिक बीड़ी का कच्चा माल कैसे इकट्ठा करता है?

बीड़ी के कारखाने में क्या-क्या होता है, अपने शब्दो में लिखो?

रोज़ के हिसाब से मज़दूरी और नग के हिसाब से मज़दूरी मिलने में क्या अंतर है?

यदि कारखाने का मालिक सट्टेदार से बनी हुई बीड़ी खरीदता तो उसे कौन से काम नहीं करने पड़ते?

ठेकेदारी प्रथा से काम

ठेकेदारी (या सट्टेदारी) प्रथा के कारण काम आसानी से बांटा जा सकता है। कुछ खास और बड़े काम जैसे तेंदू पत्ते का ठेका, बीड़ियों की सिकाई, बीड़ी बेचने की व्यवस्था आदि मालिक खुद करता है। दूसरे काम वह ठेके पर दे देता है।

जहां उत्पादन का कार्य कोई कारखाने का मालिक करवाता है वहां उसे कई प्रकार के काम करना होते हैं। ठेकेदारी प्रथा में इन बातों की जवाबदारी जैसे व्यवस्था करना, काम करवाना, मज़दूरों को पैसे देना, आदि ठेकेदार (या सट्टेदार) की होती है। मालिक इन सब कामों से मुक्त हो जाता है। ठेकेदार के मज़दूरों को कारखाने के मज़दूर नहीं माना जाता। अधिकांश यह पाया गया है कि इन मज़दूरों को कम पैसों में काम करना पड़ता है और फैक्ट्री कानून के सरकारी नियमों के अनुसार सभी सुविधाएं भी नहीं मिल पातीं।

बीड़ी मज़दूरों ने कानूनी लड़ाई लड़कर परिवार में काम कर रहे लोगों को सुविधाएं मिलने का हक़ दिलवाया। कोर्ट ने यह फैसला दिया कि सट्टेदार जिन परिवारों द्वारा काम करवाता है वे वास्तव में किसी कारखाने के मालिक के मज़दूर के रूप में काम रहे हैं। तभी से ऐसे लोगों को पहचान के लिए कार्ड देने की व्यवस्था शुरू की गई। कार्ड वाले लोगों को क्या-क्या सुविधाएं मिलनी चाहिए इसके बारे में भी तुमने पढ़ा।

तुमने बीड़ी बनाने वालों के काम में एवं कसेरे जैसे दस्तकार, के काम में कई अंतर स्पष्ट देखे होंगे। दस्तकार सामान किसी भी व्यापारी को बेच सकता है। बीड़ी जैसी ठेकेदारी व्यवस्था में बनाने वाले परिवार को बीड़ी उसी कारखाने के मालिक के पास पहुंचानी होती है जिससे उसे धागा, तम्बाकू और पत्ते मिले थे। कच्चा माल देने के कारण मालिक निश्चित कर पाता है कि उसी को बना हुआ माल प्राप्त होगा। अतः ठेकेदारी प्रथा में अपने हिसाब से सामान बेचने की छूट नहीं होती है और इस कारण बहुत बार सामान का वाजिब दाम नहीं मिलता है।

सामान बनाने वाले को अच्छे दाम मिल जाएं इस हेतु, कहीं-कहीं लोगों ने एक रास्ता निकाला है। उन्होंने आपस में मिलकर एक सहकारी सोसाइटी बनाई है जिसका मुख्य काम उत्पादन की बिक्री करना होता है।

अपने गुरुजी के साथ चर्चा करो कि सहकारी समिति द्वारा बिक्री करने से उत्पादक को क्या लाभ हो सकता है?

मध्यप्रदेश में ही बीड़ी बनाने के करीब 300 कारखाने हैं। लगभग पंद्रह लाख लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं। हमने जो तीर छाप बीड़ी का कारखाना देखा, वह तो एक छोटा कारखाना है। कुल मिलाकर मध्यप्रदेश में रोज लगभग बीस करोड़ बीड़ियां बनती हैं। सागर और जबलपुर में लाखों लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं। भोपाल में ही करीब 10,000 लोग बीड़ी बनाते हैं।

बीड़ी के समान कई उद्योग हैं जहां ठेकेदारी प्रथा से घर पर उत्पादन किया जाता है। हाथ करघे पर बना कपड़ा, रस्सी बनाना, गलीचा बनाना आदि ऐसे कुछ उद्योगों के उदाहरण हैं।

तुमने अपने आस-पास बहुत लोगों को बीड़ी पीते देखा होगा। दिन भर में एक दो बण्डल पी जाते हैं। बीड़ी पीने से तपेदिक, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं। बीड़ी पीने से पैसा खर्च होता है, परिवार दुखी रहता है और सेहत पर भी विपरीत असर पड़ता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. बीड़ी का कच्चा माल क्या-क्या है? इसकी व्यवस्था कौन करता है?
2. पृष्ठ 198 पर बने चित्र (चित्र-1) को देखकर बताओ कि वहां क्या हो रहा है? इस चित्र से सट्टेदार के काम के बारे मे क्या पता चलता है?
3. समीना ने बीड़ी किस प्रकार बनाई 6-8 वाक्यों में लिखो।
4. बीड़ी बनाने वालों को किस तरह की बीमारियां होती हैं?
5. बीड़ी किस प्रकार बनती है? नीचे दिए कथनों को क्रम से जमाते हुए, रेखा-चित्र बनाओ।
    1. घर में लोगों ने बीड़ी बनाकर सट्टेदार को दीं।
    2. सट्टेदार ने तेंदु पत्ते, तंबाकू और धागा बीड़ी बनाने वालों को बांटे।
    3. सट्टेदार ने 1000 बीड़ी के 22 रुपए 50 पैसे के हिसाब से बीड़ी बनाने वालों को पैसे दिए।
    4. सट्टेदार ने मालिक तक बीड़ियां पहुंचाईं और अपने पैसे ले लिए।
    5. मालिक ने तंदूर में उन्हें सिकवाया और छंटाई करवाई।
    6. तेंदू पत्ते, तम्बाकू और धागा मालिक ने सट्टेदार को दिया।
    7. बीड़ी के बंडल पानवालों और दुकानदारों तक पहुंचे।
    8. मालिक ने बंडल पर अपना लेबल चिपकवाया।
    9. मालिक ने तंबाकू, धागा और तेंदु पत्ते का इंतज़ाम किया।
6. कसेरे की तरह, बीड़ी बनाने वाला बीड़ी क्यों नहीं बेचता है?
7. सद्दू मियां का काम एक ठेकेदार का है-इस वाक्य को समझाओ।
8. यदि कसेरे के काम में एक सट्टेदार हो तो उसका काम कैसे बदल जाएगा? कच्चा माल, बनवाई, बर्तन बेचना.. इन बातों को ध्यान में रखते हुए लिखो।
9. बीड़ी बनाने का काम कारखाने में भी हो सकता है, फिर इसे ठेकेदारों द्वारा घर पर क्यों करवाया जाता है?
10. कार्ड वाले बीड़ी मज़दूर और बिना कार्ड वाले मज़दूर में क्या अन्तर है - समझाओ।